श्रावण-भाद्रपद, वि.सं. २०८०
जुलाई-सितम्बर, 2023

ISSN : 0378-391X
भाग-84, अंक: 3
यूजीसी केयर लिस्ट में सम्मिलित

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

शताब्दी की ओर

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA वसुधैव कुटुम्बकम् ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

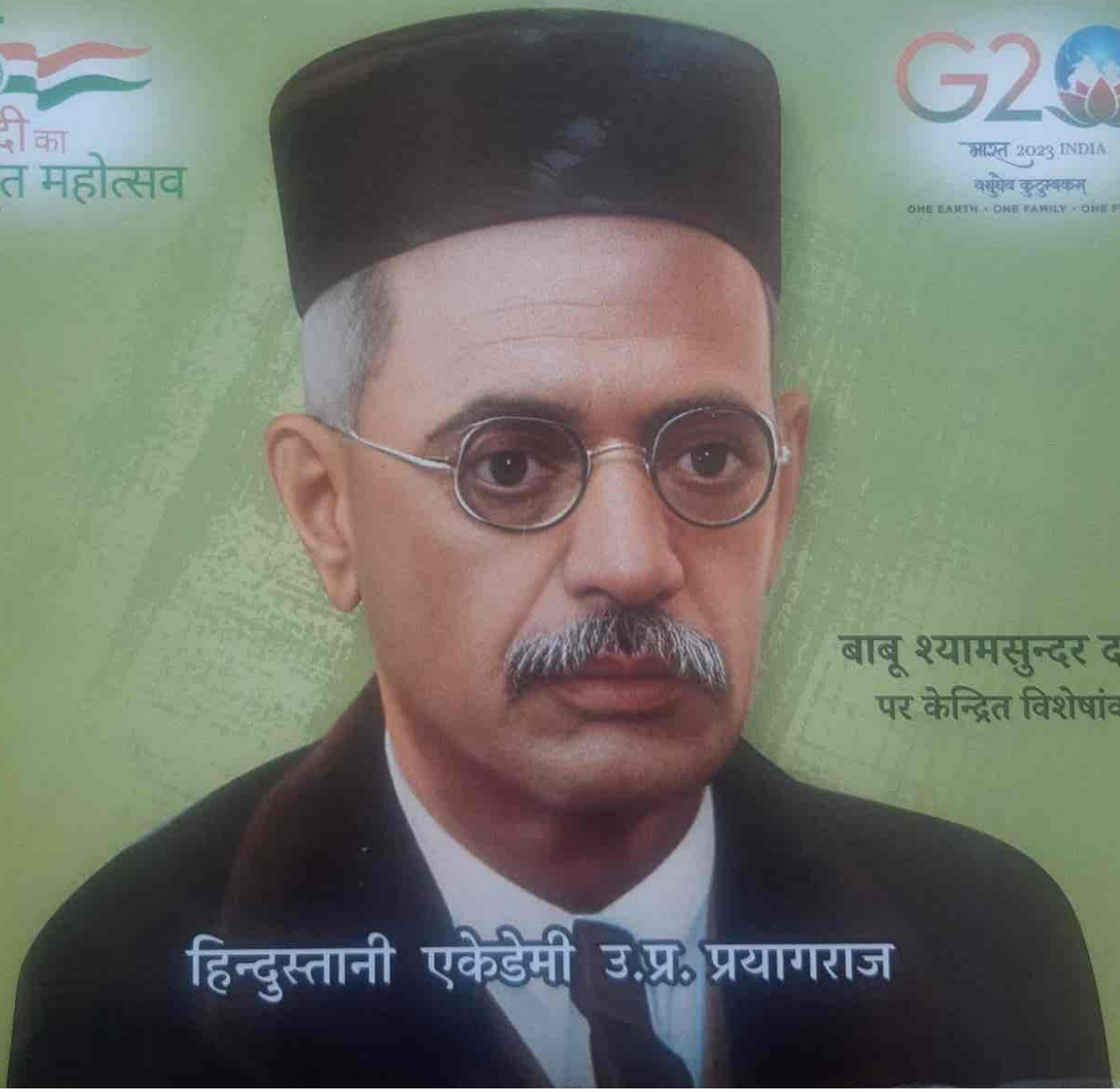

बाबू श्यामसुन्दर दास
पर केन्द्रित विशेषांक

हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र. प्रयागराज

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

भाग–84, अंक–3
जुलाई–सितम्बर, 2023
श्रावण–भाद्रपद, वि. संवत् २०८०

यू.जी.सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित
ISSN : 0378-391X

प्रकाशक
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
12 डी, कमला नेहरू रोड, प्रयागराज–211001 (उ.प्र.)
दूरभाष : 0532-2407625

website : www.hindustaniacademyup.org.in
email : hindustaniacademyup@gmail.com

समस्त भुगतान हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज के नाम मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

शुल्क : **एक प्रति ₹ 50.00, वार्षिक : ₹ 200.00**
विशेषांक : ₹ 100.00

मुद्रक : **आस्था पेपर कन्वर्टर, प्रयागराज**

प्रकाशित रचनाओं से हिन्दुस्तानी एकेडेमी या सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश होगा।

- बाबू श्यामसुंदर दास की जीवन यात्रा के पदचिन्ह और नागरी प्रचारिणी सभा – प्रीति सिंह ... 137
- बाबू श्यामसुंदर दास का निबंध लेखन के क्षेत्र में अवदान – नीलम सिंह ... 143
- बाबू श्यामसुन्दर दास का चिंतन : सन्दर्भ 'युवा एवं नैतिक शिक्षा' – तेज प्रकाश ... 148
- बाबू श्यामसुंदर दास के आलोचना कर्म का अनुशीलन – अर्चना मिश्रा ... 154
- डॉ. श्यामसुन्दर दास का हिन्दी भाषा में योगदान – शर्मिला यादव ... 159
- आधुनिक हिंदी के निर्माता–बाबू श्यामसुंदर दास – प्रवीण कुमार सहगल ... 165
- बाबू श्यामसुन्दर दास की आलोचना दृष्टि – प्रतीची मालवीय ... 168
- बाबू श्यामसुन्दर दास का व्यक्तित्त्व – आकांक्षा यादव, सुमन जैन ... 173
- हिंदी भाषा विकास के प्रेरणा स्रोत–बाबू श्यामसुंदर दास – रामप्यारे प्रजापति ... 177
- डॉ. श्यामसुन्दर दास : सम्पादक के रूप में – वर्षा अग्रवाल ... 180
- बाबू श्यामसुंदर दास और उनकी आलोचना दृष्टि – सुप्रिया द्विवेदी ... 184
- हिंदी साहित्य इतिहास लेखन और श्यामसुंदर दास – राजेश कुमार गर्ग ... 188
- कला-काव्य संबंधी दृष्टि और श्यामसुंदर दास – रमा शंकर सिंह ... 192
- डॉ. श्यामसुन्दर दास की कला सम्बन्धी दृष्टि – अनीता तिवारी ... 196
- हिन्दी साहित्य : बाबू श्यामसुन्दर दास एवं काशी नागरी प्रचारिणी सभा – सतीश चन्द्र जैसल, कंचन ... 199
- श्यामसुन्दर दास : सृजन सामर्थ्य के विविध आयाम – कमलेश सिंह ... 202
- श्यामसुंदर दास की दृष्टि में : कबीर – पुष्पा बरनवाल ... 205
- बाबू श्यामसुंदर दास : व्यक्तित्व एवं कृतित्व – प्रज्ञा ओझा ... 211
- कबीर ग्रन्थावली और बाबू श्यामसुंदरदास – कविता सरोज ... 213
- हिन्दी साहित्य के प्रणेता बाबू श्यामसुन्दर दास – पुष्पा रानी ... 218
- हिंदी के विकास में बाबू श्याम सुंदर दास का योगदान – अर्चना राय ... 223
- श्यामसुंदर दास का 'साहित्यालोचन' – अमन वर्मा (दीप अमन) ... 225
- डॉ. श्यामसुंदर दास – अश्विनी सिंह ... 229
- संपादक : बाबू श्यामसुन्दर दास – ऋचा सिंह ... 231
- बाबू श्यामसुन्दर दास का हिंदी भाषा एवं साहित्य को प्रदेय : एक अनुशीलन – कृष्ण कुमार यादव 'कनक' ... 234
- भाषा के अग्रदूत बाबू श्यामसुन्दर दास – बलजीत कुमार श्रीवास्तव ... 241
- हिंदी के अनन्य साधक बाबू श्यामसुंदर दास – बृजेश कुमार पाण्डेय ... 244
- हिन्दी के विकास में बाबू श्यामसुन्दर दास की भूमिका – संजय कुमार सिंह ... 249

■ जयन्ती पर विशेष : (31 जुलाई 1880)
- प्रेमचंद और गाय – उदय प्रताप सिंह ... 253

■ रचनाकारों के पते ... 255

■ रेखाचित्र – जूही शुक्ला

●●●

बाबू श्यामसुंदर दास की जीवन यात्रा के पदचिन्ह और नागरी प्रचारिणी सभा

प्रीति सिंह

बाबू श्यामसुंदर दास नागरी, हिंदी भाषा व साहित्य के शिखर पुरुष है, जिनसे हिंदी भाषा की गति का प्रवाह संस्कारित होता है। उन्होंने अपनी सशक्त लेखनी के माध्यम से हिंदी को एक नवीन गति प्रदान की। श्यामसुंदर दास जी ने साहित्यिक दृष्टि से भाषा को राष्ट्रधर्म प्रधान मानकर रचनाधर्मिता की। बाबू श्यामसुंदर दास हिंदी भाषा के अनन्य साधक, विद्धवान आलोचक व शिक्षाविद थे। राष्ट्रीय नवजागरण के उषाकाल में भारतेन्दु ने 'निजभाषा उन्नति' की जो नींव डाली थी, उसे पल्लवित पुष्पित करने का श्रेय बाबू श्यामसुंदर दास जी को ही जाता है। द्विवेदी जी के सम्पादकत्व में 'सरस्वती' पत्रिका का जो पहला अंक प्रकाशित हुआ, उसमें कृतज्ञता ज्ञापन स्वरूप बाबू श्यामसुंदर दास जी का चित्र छापा गया और यह पंक्ति भी–

'मातृ भाषा के प्रचारक विमल बी. ए. पास,
सौम्य शील निधान बाबू श्यामसुन्दर दास।'

बाबू श्याम सुंदरदास अपने समकालीन भाषाविदों के प्रेरणास्त्रोत रहे। श्यामसुंदर दास जी ने संस्कृतनिष्ठ एवं भावुकतापूर्ण शैली में हिंदी भाषा की गरिमा को और अधिक संवर्धन करने का प्रयास किया। साथ ही हिंदी भाषा में प्रसाद और ओज का संयोजन कर भाषा में प्रवाहमयता एव संजीवता का संचार किया।

"वे एक सफल आयोजक, प्रबन्धक, सम्पादक, शोधक, अध्यापक, चरित एवं वृत्त लेखक और आलोचक थे। 'काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा' के संस्थापक और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के संघटक के रूप में आपने अपनी अद्भुत कार्यक्षमता का परिचय दिया है।"[1]

सम्पादन के क्षेत्र में बाबू साहब ने पथ-प्रदर्शन का कार्य किया है। वह एक अन्वेषक के रूप मे हिंदी को नवीन दिशा प्रदान करते रहे। बाबू साहब ने हिंदी को समृद्ध साहित्य दिया, जो अविस्मरणीय है। श्यामसुंदर दास जी को उनकी हिंदी सेवा के उपलक्ष्य में भारत सरकार से 26 जनवरी सन् 1920 में 'राय साहब' की और जून सन् 1933 में 'राय बहादुर' की उपाधि प्रदान की गई।

बाबू साहब दृढ़ता के प्रतीक थे, जिस कार्य को करने के लिए कटिबद्ध हो जाते थे, उसे अनेक विरोधों संघर्षों को सहते हुए भी बड़ी कुशलता से पूर्ण करते थे। हिंदी की सेवा उनके जीवन का एकमात्र लक्ष्य था। जब काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में बाबू साहब थे, जहाँ उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिंदी तथा संस्कृत का अध्ययन अध्यापन कार्य अंग्रेजी भाषा के माध्यम से होता था, यह बात बाबू साहब को अनुचित प्रतीत हुई।

"काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष के रूप में बाबू साहब की नियुक्ति सन् 1921 ई. में हुई थी। उन्हें हिंदी विभाग को सर्वांठपूर्ण बनाने की चिन्ता थी। उन्होंने एफ.ए., बी.ए. और एम.ए. कक्षाओं के लिए पाठ्यक्रम निर्धारण और पाठ्य-पुस्तकों के चयन के साथ ही अन्वेषण-कार्य आरंभ कराने की भी व्यवस्था की। नागरी प्रचारिणी सभा के माध्यम से हस्त लिखित हिंदी ग्रन्थों की खोज का कार्य सन 1900 से ही आरम्भ हो गया था।"[2]

श्यामसुंदर दास जी ने अनेकों पुस्तकों का सम्पादन किया, अनेक कोश तैयार कराए, प्रमुख पुस्तकों में 'चन्द्रावती' अथवा 'नासिकेतोपाख्यान', 'छत्र प्रकाश', 'पृथ्वीराज रासो',